इकाई 21 प्रत्यक्ष और सहभागी लोकतंत्र

इकाई की रूपरेखा

21.0 उद्देश्य

21.1 परिचय : लोकतंत्र का अर्थ

21.1.1 विभिन्न अर्थ

21.1.2 सरकार और नागरिकों के मध्य संपर्क साधना

21.2 प्रत्यक्ष लोकतंत्र क्या है?

21.2.1 प्रत्यक्ष लोकतंत्र के सैद्धांतिक आधार

21.2.2 प्रत्यक्ष लोकतंत्र के गुण

21.3 ग्रीक लोकतंत्र प्रत्यक्ष लोकतंत्र के रूप में

21.3.1 एथेनियन लोकतंत्र : प्रसिद्धी के कारण

21.3.2 अरस्तु की 'द पॉलिटिक्स'

21.4 प्रत्यक्ष लोकतंत्र की सीमाएँ

21.4.1 एथेनियन लोकतंत्र की कमियाँ

21.5 आधुनिक समय में प्रत्यक्ष लोकतंत्र

21.6 सारांश

21.7 कुछ उपयोगी संदर्भ

21.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

21.0 उद्देश्य

इस इकाई में आपको प्रत्यक्ष (प्राचीन) और सहभागिता पूर्ण (आधुनिक) लोकतंत्र के बारे में जानकारी मिलेगी। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- लोकतंत्र के अर्थ को समझ पाएँगे;
- उसके विभिन्न रूपों जैसे प्रत्यक्ष और भागीदारी लोकतंत्र में अंतर स्थापित कर लेंगे; और
- विभिन्न रूपों की खूबियों और कमियों का परीक्षण कर पाएँगे।

21.1 परिचय : लोकतंत्र का अर्थ

विभिन्न दार्शनिकों ने लोकतंत्र शब्द की अलग-अलग ढंग से व्याख्या की है। यह सरकार का एक रूप और आदर्श, आकांक्षा, मापदण्ड दोनों ही है। लोकतंत्र का मूल तत्त्व आत्म-शासन है। लोकतंत्र शब्द की उत्पत्ति प्राचीन ग्रीस में देखी जा सकती है। यह ग्रीक शब्द (Democratia) से उत्पन्न हुआ, इसका अर्थ जनता के द्वारा शासित होना है। यह शब्दानुसार शासक और शासित, दोनों के बीच अलगाव के अर्थ को स्वीकार करता है। दिलचस्प बात यह है कि साम्यवाद और समाजवाद, जिनका कि मार्क्सवाद में संदर्भ बिन्दु है, उनके ठीक विपरीत लोकतंत्र किसी विशेष सैद्धांतिक स्रोत या आदर्श पर आधारित नहीं है। वास्तव में, यह पश्चिमी सभ्यता के पूरे विकास की रचना है और इसलिए आसानी से किसी भी अर्थ में प्रयोग कर ली जाती है। इस प्रकार लोकतंत्र के आदर्श का इतिहास वस्तुतः उलझा हुआ है और विरोधास्पद और भ्रामक विचारधाराओं से ओतप्रोत है। लोकतंत्र भ्रामक है, क्योंकि इसका अभी भी क्रियाशील इतिहास है और क्योंकि मुद्दे भी उलझे हैं।

तथापि इसके औचित्य को इस आधार पर स्वीकार किया गया है कि यह निम्न मौलिक मूल्यों या अच्छाइयों जैसे समानता, स्वतंत्रता, नैतिकता, आत्मविकास, सामान्य हित, निजी हितों, सामाजिक उपयोगिता इत्यादि को प्राप्त करने में सहायक है।

21.1.1 विभिन्न अर्थ

इसलिए लोकतंत्र शब्द से संबंधित अनेक अर्थ निकाले गये है। इनमें से कुछ निम्न हैं :

- सरकार का एक रूप जिसमें लोग स्वतः शासन करते हैं।
- एक ऐसा समाज जिसका आधार समान अवसर तथा व्यक्तिगत गुण होते हैं न कि सामाजिक स्तरीकरण तथा सुविधा।
- शासित की सहमति पर आधारित सरकार की व्यवस्था।
- बहुसंख्यक शासन के सिद्धांत पर आधारित निर्णय लेने की प्रक्रिया।
- एक ऐसी शासन प्रणाली जो अल्पसंख्यकों के अधिकारों तथा हितों की रक्षा बहुसंख्यकों की शक्ति पर नियंत्रण रख कर करती है।
- सार्वजनिक पदों पर भर्ती लोक प्रिय वोट के लिए प्रतियोगी संघर्ष द्वारा।
- सरकार की एक ऐसी प्रणाली जो लोगों के राजनीतिक जीवन में सहभागिता के बिना भी लोगों की अभिरुचियों का ख्याल रखती है। (हेवुड, 1997:66)

21.1.2 सरकार और नागरिकों के मध्य संपर्क साधना

लोकतंत्र को जिन विभिन्न अर्थों के साथ जोड़ा जाता है, उनसे एक बात बिल्कुल साफ है कि लोकतंत्र सरकार और नागरिकों के मध्य संपर्क साधता है। यह संबंध उस समाज की वृहत राजनीति संस्कृति के आधार पर कई तरीको से स्थापित किया जा सकता है। इसके कारण प्रजातांत्रिक शासन के वास्तविक स्वरूप से संबंधित सैद्धांतिक विभिन्नताएं और राजनीतिक विवाद देखने को मिलते हैं। तथापि, लोकतंत्र पर कोई भी वाद-विवाद तीन महत्त्वपूर्ण प्रश्नों की तरफ झुकता है।

- लोग कौन हैं?
- किस अर्थ में लोग शासन करते हैं?
- लोकप्रिय शासन का विस्तार कहाँ तक होना चाहिए? (हेवुड, 1997:66)

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाएं।

1) लोकतंत्र से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) लोकतंत्र के अनेक अर्थों में से कुछ पर प्रकाश डालिये।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

21.2 प्रत्यक्ष लोकतंत्र क्या है?

प्रत्यक्ष लोकतंत्र सरकार का एक रूप होता है, जिसके अंतर्गत समानता की प्रकृति और खुले विचारों से प्रेरित सभी वयस्क नागरिकों की सहभागिता से सभी सामूहिक निर्णय लिये जाते है। चर्चायें या परिचर्चायें प्रमुख होती हैं, क्योंकि जो निर्णय पूरी तरह से विचार-विमर्श के बाद लिये जाते हैं, उन्हें सूचित, तर्कशील और विवेकशील माना जाता है। ऐसा इसलिये क्योंकि परिचर्चा एक समूह को विभिन्न हितों में सामंजस्य बिठाने में मदद करती है और सदस्यों को मुद्दों के बारे में जानकारी प्रदान करती है। साथ ही, समूह के अनुभव का लाभ उठाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, चर्चाएं व्यक्तियों के एक समूह को प्रभावित करने और समूह से प्रभावित होने, यह दोनों कार्य करती हैं। (Hague et al, 1998:20)

प्राचीन ग्रीक दार्शनिक अरस्तु के अनुसार प्रत्यक्ष लोकतंत्र की सारगर्भित बात यह है कि उसमें ऐसी व्यवस्था है कि ''सभी एक दूसरे को नियंत्रित करते हैं और कि प्रत्येक सभी को''। यह पहली बार प्राचीन ऐथेन्स में जनता की एक विशाल जनसभा के परिणामस्वरूप एक सरकार के रूप में देखने को मिला था। इसका आधुनिक रूप जनमत संग्रह है। ग्रामीण भारत में 'ग्राम सभा' जिसकी 73 संवैधानिक संशोधन के तहत संकल्पना की गयी है, प्रत्यक्ष लोकतंत्र का उदाहरण है।

21.2.1 प्रत्यक्ष लोकतंत्र के सैद्धांतिक आधार

अतः प्रत्येक लोकतंत्र में मत के माध्यम से सबसे सही निर्णय कभी नहीं लिये जा सकते हैं। प्रत्यक्ष लोकतंत्र का सिद्धांत आम सहमति से शासन करना होता है। यह आम सहमति विकल्पों पर सावधानीपूर्वक विचारों के फलस्वरूप पैदा होती है। औपचारिक सहभागी संस्थाओं के अभाव में लोगों को जनता से विचार-विमर्श के द्वारा अपने आप निर्णय लेना होता है। दूसरे शब्दों में, निम्नलिखित सिद्धांत प्रत्यक्ष लोकतंत्र को प्रभावित करते है :

- लोग संप्रभु होते हैं।
- संप्रभुता पृथक नहीं हो सकती है और उसका प्रतिनिधित्व नहीं किया जा सकता है।
- लोगों को अपनी सार्वजनिक इच्छा अवश्य जाहिर करनी चाहिए और जनमत संग्रह के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से निर्णय लेने चाहिए।
- निर्णय बहुसंख्यक शासन के आधार पर लिये जाने चाहिए।

सारांशतः प्रत्यक्ष लोकतंत्र, प्रत्यक्ष पहले से न विचार हुआ और सरकार के कार्यों में

नागरिकों की निरन्तर सहभागिता पर आधारित होता है। प्रत्यक्ष लोकतंत्र सरकार और शासित तथा राज्य और नागरिक समूदाय के बीच अंतर को खत्म करता है। प्रत्यक्ष लोकतंत्र में राज्य और समाज एक बन जाते हैं। यह लोकप्रिया शासन की एक प्रणाली है।

21.2.2 प्रत्यक्ष लोकतंत्र के गुण

प्रत्यक्ष लोकतंत्र के गुणों में निम्न आते हैं :

- चूँकि यह लोकतंत्र का एकमात्र शुद्ध स्वरूप है, इसमें नागरिकों का अपनी जीवन दिशा पर नियंत्रण बढ़ जाता है।.
- यह बेहतर सूचित और अधिक राजनीतिक चपलता वाले नागरिक उत्पन्न करता है और इस प्रकार प्रत्यक्ष लोकतंत्र के पास शैक्षणिक सुविधायें होती हैं।
- मतलबी राजनीतिज्ञों पर बिना भरोसा किये यह जनता को अपने दृष्टिकोण और हितों को व्यक्त करने में समर्थ बनाता है।
- इस अर्थ में शासन को वैधानिकता प्रदान करता है कि लोग प्रत्यक्ष तंत्र के किसी भी निर्णय को आसानी से स्वीकार करते हैं क्योंकि वे उनके द्वारा बनाये गये होते हैं।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाएं।

1) प्रत्यक्ष लोकतंत्र से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रत्यक्ष लोकतंत्र के कौन-कौन से गुण हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

21.3 ग्रीक लोकतंत्र प्रत्यक्ष लोकतंत्र के रूप में

प्रत्यक्ष लोकतंत्र का सार्वभौमिक उदाहरण चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान प्राचीन ऐथेंस का है। अब तक का यह लोकप्रिय सहभागिता की एकमात्र शुद्ध या आदर्श प्रणाली माना जा सकता है। इसके पास एक विशिष्ट प्रकार का प्रत्यक्ष लोकप्रिय शासन था, जिसके अंतर्गत सामूहिक बैठक में सभी महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये जाते थे। सभा या ऐकलैसिया (Ecclesita) द्वारा सभी महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये जाते थे। सभा कम से कम साल में चालीस बार अपने सामने आये मुकदमों को तय करने के लिये आयोजित की जाती थी। जब पूर्णकालिक जनअधिकारियों की आवश्यकता होती थी, वे बड़ी संख्या में चुने जाते थे। इस प्रक्रिया का अनुसरण यह सुनिश्चित करने के लिये किया जाता था कि ये नागरिकों के बड़े निकाय का एक हिस्सा हो, पदों की तथापि कोई निश्चितता नहीं थी और तीव्र क्रमबद्धता में बदलते थे जिससे सभी नागरिकों को शासन करने की कला का अनुभव प्राप्त हो जाता था और इस प्रकार अधिकतम संभव सहभागिता को प्राप्त करने की कोशिश की गयी थी। पाँच सौ नागरिकों की एक सभा परिषद या कार्य कमेटी के रूप में कार्य करती थी और पचास सदस्यों की कमेटी बदले में परिषद् के समक्ष प्रस्ताव पेश करती थी।

21.3.1 एथेनियन लोकतंत्र : प्रसिद्धि के कारण

यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि एथेनियन लोकतंत्र इतना उल्लेखनीय क्यों था। एथेन्स ने वास्तव में सभी नागरिकों को मताधिकार देकर एक नई राजनीतिक संस्कृति का सूत्रपात किया। नागरिक न केवल सभा की नियमित बैठकों में भाग लेते थे, बल्कि वे बड़ी संख्या में जनपद और निर्णय प्रक्रिया की जिम्मेदारियों को संभालने के लिये तैयार होते थे। औपचारिक रूप में, नागरिकों में पद और धन के आधार पर उनके सार्वजनिक मामलों के संदर्भ में भेद किया जाता था। डैमोस (The Demos) के पास सवंप्रभु शक्ति थी, जैसे विद्यायिकी और न्यायिक गतिविधियों की संचालन की सर्वोच्च सत्ता (Held, 1987:17) नागरिकता की एथेनियम विचारधारा ने इस कार्य में भाग लेने और राज्य के मामलों में सीधी सहभागिता को अवश्यंभावी बनाया।

एथेनियन लोकतंत्र नागरिक गुण (civil virtue) के सिद्धांत के प्रति सामान्य प्रतिबद्धता को दर्शाता है। जिसका वास्तविक अर्थ गणतांत्रिक नगर राज्य के लिये प्रतिबद्धता और समर्पण निजी ज़िन्दगी सार्वजनिक मामलों के अधीन तथा सामान्य अच्छाइयों की प्राप्ति थी। दूसरे शब्दों में सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत जिंदगी में कोई अंतर नहीं था। और व्यक्ति आत्म संतुष्टि प्राप्त कर पोलिस (नगर राज्य) के अंदर सम्मानित जिंदगी जी सकता था। उदाहरण स्वरूप, नागरिकों को अधिकार एवं जिम्मेदारी निजी व्यक्तियों के रूप में नहीं, बल्कि, राजनीतिक समुदाय के सदस्यों के नाते प्राप्त थे। इस प्रकार केवल पोलिस (Polis) में ही जनअधिकार और अच्छी जिंदगी संभव थे। इस प्रकार रॉबर्ट डाल के अनुसार ''ग्रीक दृष्टि में लोकतंत्र राजनीति की एक प्राकृतिक सामाजिक गतिविधि है। इसे जिन्दगी के अवशेष से साफ अलग नहीं किया जा सकता। बल्कि राजनीतिक जिंदगी मात्र विस्तार और अपने आप मार्धुय है।''(Dahl, 1989 :18) ऐसा प्रतीत होता है कि एथेनियन स्वतंत्र और मुक्त राजनीतिक जिंदगी जिन्दगी में विश्वास करते थे जिसके अंतर्गत नागरिक अपनी क्षमताओं और कौशल और सामान्य हित के लक्ष्य को विकसित और अनुभव कर सकते थे। और न्याय का अर्थ नगर राज्यों में नागरिक की भूमिका तथा स्थान को निश्चित तथा अनुभव करना था। (Held 1987:18) जिसके सभी नागरिक सदस्य होते थे।

21.3.2 अरस्तु की 'द पॉलिटिक्स'

हमें अरस्तु की प्रसिद्ध कृति 'द पॉलिटिक्स' ईसा पूर्व 335 और 323 के बीच लिखित में प्राचीन लोकतंत्र के बारे में अधिकतम विस्तृत और स्मरणीय जानकारी मिलती है। उनकी कृति में लोकतंत्र के दावों, नैतिक मापदण्डों और उद्देश्यों का विश्लेषण मिलता है और अनेक ग्रीक लोकतंत्रों की मुख्य विशेषताओं की विशिष्टता का भी उल्लेख है। उनके अनुसार स्वतंत्रता और समानता, विशेषकर यदि आप लोकतंत्रवादी हैं तो दोनों स्वीकार्य हैं, एक के अस्तित्व के बिना दूसरे को प्राप्त करना कठिन है।

स्वतंत्रता के दो लक्षण हैं : i) शासन करना तथा बदले में शासित होना, और ii) जैसा व्यक्ति चुनता है, उसी तरह से जीता है। यदि व्यक्ति प्रथम लक्षण के आधार पर सरकार के प्रभावकारी सिद्धांत को कार्यरूप देना चाहता है, तो यह आवश्यक है कि सभी नागरिक समान हों। बिना सांख्यकीय समानता के यह संभव नहीं है कि बहुसंख्यक सम्प्रभु हों। सांख्यिकी समानता से यहाँ तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति की शासन कला में समान हिस्सेदारी हो। प्राचीन या पूर्व लोकतंत्रवादियों ने अनुभव किया कि सांख्यिकी समानता प्राप्त करना संभव था, 1) क्योंकि नागरिकों को सरकार में भाग लेने के लिये वेतन दिया जाता है और इस लिए उन्हें राजनीतिक सहभागिता की वजह से कुछ खोना नहीं पड़ता है। 2) नागरिकों को समान मत देने का भी अधिकार है। 3) सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को पद ग्रहण करने का समान अवसर प्राप्त है। सार में हम इससे यह समझ सकते हैं कि समानता स्वतंत्रता का व्यवहारिक आधार है और इसका नैतिक आधार भी है। इस प्रकार अरस्तु के विचार के आधार पर सार्वभौमिक लोकतंत्र जिसमें संनिहित है प्रत्यक्ष लोकतंत्र, स्वतंत्रता को निश्चित करता है, और स्वतंत्रता समानता को निश्चित करती है।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को ईकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलायें।

1) एथेनियन लोकतंत्र को असाधारण क्यों माना जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) अरस्तु की 'द पॉलिटिक्स' में दिये दृष्टिकोणों का संक्षिप्त में परीक्षण करें।

.....

.....

.....

.....

.....

21.4 प्रत्यक्ष लोकतंत्र की सीमाएँ

प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक विलक्षण गुण प्राचीन एथेंस में प्रचलित इसकी विशिष्टता थी। नगर-राज्य एकता, अखण्डता, सहभागिता और पूरी तरह से प्रतिबंधित नागरिकता को दर्शाता था। जैसा कि पहले बताया गया है कि सार्वजनिक और निजी ज़िन्दगी में कोई अंतर नहीं था और यहाँ तक कि राज्य नागरिकों की जिन्दगी से गंभीर रूप से संबंध था। तथापि जनसंख्या का एक छोटा वर्ग ही राज्य और सरकार से सम्बंधित था। सिर्फ दिलचस्प बात यह गौर करने की है कि एथेनियन राजनीतिक संस्कृति वयस्क पुरुष संस्कृति थी। उदाहरणतः केवल 20 वर्ष से अधिक उम्र के पुरुष ही नागरिक बनने के योग्य थे। कुलपिताओं (patriarchs) के लोकतंत्र के अंतर्गत महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे और उनके नागरिक अधिकार भी सीमित थे; दूसरे तरह के निवासी, जैसे अप्रवासी औपचारिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिये अयोग्य थे। ये कुछ अन्य प्रकार के नागरिक एथेन्स में कई पीढ़ी पहले बस गये थे, लेकिन उन्हें मूल निवासी का दर्जा प्राप्त नहीं था। तथापि गुलामों के अंतर्गत राजनीतिक रूप से बहुत पिछड़े लोग आते थे। यहाँ हमें जानकारी मिलती है कि एथेन्स में प्रचलित राजनैतिक समानता का अर्थ सबों के लिये समान शक्ति नहीं था। यह वस्तुतः समानता का एक रूप था, जोकि समान पद वाले व्यक्ति पर लागू होता था और एथेनियन संदर्भ में इसका तात्पर्य सिर्फ पुरुषों और एथेंस में पैदा होने वाले व्यक्ति में से था। इस प्रकार अनेक व्यक्ति एक विस्तृत नागरिकता के अल्पसंख्यक की तरह थे (फिनले 1983) अविवादित रूप से प्राचीन एथेंस की राजनीति काफी हद तक अप्रजातांत्रिक आधार पर अवस्थित थी।

21.4.1 एथेनियन लोकतंत्र की कमियाँ

हम उपरोक्त विवरण से जो निष्कर्ष निकाल सकते हैं, वह यह कि प्राचीन एथेन्स में प्रचलित लोकतंत्र में गंभीर कमियाँ थीं। यदि आधुनिक लोकतंत्र बाजार अर्थतंत्र पर आधारित है, तो एथेंस का लोकतंत्र दासता पर अवस्थित था। गुलामों के श्रम ने अभिजात्य नागरिक को सहभागिता का अवसर प्रदान किया, स्थायी नौकरशाही व्यवस्था की कमी और अप्रभावकारी सरकार के चलते अन्ततः युद्ध में पराजय के बाद एथेनियन गणतंत्र का पतन हुआ। दिलचस्प बात यह है कि लोकतंत्र के इस रूप, यानि कि प्रत्यक्ष लोकतंत्र के सबसे अधिक प्रभावकारी आलोचक थे। दार्शनिक प्लैटो उन्होंने राजनीतिक समानता के सिद्धांत की आलोचना इस आधार पर की कि अधिकतर लोग स्वभाव से समान नहीं होते हैं, और इसलिए, स्वयं बुद्धिमानी से निर्णय नहीं ले सकते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि उनके पास ज्ञान और न ही अनुभव होता है। इसका निदान उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द रिपब्लिक' में प्रस्तुत किया था, वह यह है कि सरकार को दार्शनिक राजाओं के एक वर्ग के हाथों सौंपा जाये, ऐसे संरक्षक जिनका शासन एक ज्ञानी अधिनायकवाद के कुछ समान होगा, व्यवहारिक तौर पर तथापि, एथेनियन लोकतंत्र की प्रमुख कमी थी कि यह जनसंख्या के अधिक व्यक्तियों को राजनीतिक गतिविधियों से अलग रखकर ही संचालित हो सकती है। यह मात्र सीमित जनसंख्या वाले छोटे नगर राज्यों में संभव था और न कि वर्तमान के बड़ी जनसंख्या वाले आधुनिक वृहत लोकतंत्रों में। इन कमियों के बावज़ूद एथेनियन ढाँचा प्रजातांत्रिक सिद्धांतों को स्थापित करने में निर्णायक था। फाइनर के अनुसार ''ग्रीकों ने वर्तमान युग की सबसे अधिक सक्षम दो राजनीतिक विशेषताओं का अविष्कार किया : प्रथम, नागरिक की अवधारणा को इजाद करना बनिस्पत अधीनस्थ की और द्वितीय, लोकतंत्र रचना।

बोध प्रश्न 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलायें।

1) प्रत्यक्ष लोकतंत्र की सीमाओं पर प्रकाश डालें और एक उपयुक्त उदाहरण दें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

21.5 आधुनिक समय में प्रत्यक्ष लोकतंत्र

प्रत्यक्ष लोकतंत्र के सार्वभौमिक ढाँचे और राजनीतिक जीवन में निरंतर लोकप्रिय सहभागिता, दुनिया के कुछ खास भागों, मुख्यतः अमेरिका में न्यु इंग्लैण्ड की नगर बैठकों और छोटे स्विस कैंटनों (Cantons) में कार्यरत सामुदायिक सभाओं में विद्यमान है। प्राचीन एथेन्स की जनसभाओं की तुलना में वर्तमान समय में कार्यरत सबसे सामान्य विधि जनमत संग्रह है। जनमत संग्रह एक प्रकार का मत है, जिसका प्रयोग मतदाता लोक नीति के विशेष मुद्दों पर अपना विचार प्रकट करने के लिए कर सकता है। यह चुनाव से अलग है, जिसमें मतदाता आवश्यक रूप से सार्वजनिक पद पर किसी को चुनने का साधन होता है और जोकि नीति के सार को प्रभावित करने, प्रत्यक्ष या विश्वसनीय विधि नहीं है। प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक यंत्र, जनमत संग्रह का प्रयोग प्रतिनिधि संस्थाओं को स्थानांतरित करने के लिये, नहीं, बल्कि उन्हें पूरा (supplement) करने के लिये किया जाता है। वे परामर्शदात्री या अनिवार्य हो सकते हैं। वे मुद्दों को वाद-विवाद के लिये भी उठा सकते हैं (सुझाव या प्लैबिसाइट)।

21.6 सारांश

वृहद अर्थ में लोकतंत्र का अर्थ लोगों द्वारा शासन होता है, तथापि समय के साथ-साथ इसका विभिन्न अर्थ माना जाता रहा है। लोकतंत्र की प्रकृति के संबंध में वाद-विवादों ने तीन महत्त्वपूर्ण प्रश्नों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। सर्वप्रथम, किस सीमा तक राजनीतिक शक्ति का विभाजन होना चाहिए। द्वितीय, क्या लोगों को स्वयं शासन में भाग लेना चाहिये? या सरकर को चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथों में सौप देना चाहिए। तीसरे, क्या प्रजातांत्रिक प्रक्रिया का प्रयोग करके सामूहिक निर्णय लेना उपयुक्त है? प्राचीन ग्रीस में उत्पन्न और कार्यरत प्रत्यक्ष लोकतंत्र में नागरिक स्वयं प्रतिनिधि संस्थाओं के बगैर निर्णय लेते थे। यह विश्लेषण सार्वजनिक चर्चा के महत्त्व पर जोर देता है, सहभागियों और निर्णय की गुणवत्ता दोंनों की दृष्टि से लोकतंत्र के इस ढाँचे की सख्त सीमायें थीं। अतः आधुनिक काल में यह सरकार का लोकप्रिय रूप नहीं है।

21.7 कुछ उपयोगी संदर्भ

डाल, आर. *डैमोक्रेसी एंड इट्स क्रिटिक्स,* न्यू हेवन, सी टी : येल विश्वविद्यालय प्रेस, 1989

हेल्ड डेविड, *मॉडल्स ऑफ डैमोक्रेसी,* आक्सफोर्ड : पॉलिटी प्रेस; स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 1996

हेवूड ऐंडरू – *पालिटिक्स,* लंदन : मैकमिलन प्रेस, 1997

हेग, आर. एट.एल., *कम्पैरिटिव गर्वमैंट ऐंड पॉलिटिक्स : ऐन इंट्रोडक्शन,* लंदन, मैकमिलन प्रेस, 1998

फिनले, एम.आई., *पॉलिटिक्स इन दी एंशेंट वर्ल्ड,* कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, 1983

21.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 21.1 देखिये।

2) उपभाग 21.1.1 देखिये।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 21.2 देखिये।

2) उपभाग 21.2.2 देखिये।

बोध प्रश्न 3

1) उपभाग 21.2.2 देखिये।

2) उपभाग 21.3.2 देखिये।

बोध प्रश्न 4

1) भाग 21.4 देखिये।